Equilibrium of Firm

एक फर्म उस समय सन्तुलन की अवस्था में होता है जब वह अपने वर्तमान उत्पादन की मात्रा से सन्तुष्ट होता है। उत्पादन में कमी करने की या वृद्धि करने की उसमें कोई भी प्रवृत्ति नहीं पाई जाती है यह अवस्था उस समय होगी जब या तो फर्म को अधिकतम लाभ प्राप्त होगी या फर्म को होने वाली हानि न्यूनतम होगी।

एक फर्म साम्य की हालत में तब कही जायगी जबकि उसके कुल उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन की कोई प्रवृत्ति नही हो अर्थात साम्यावस्था में फर्म उत्पादन की वह मात्रा तथा व कीमत निश्चित करेगी जिस पर उसको अधिकतम लाभ प्राप्त हो।

फर्म के सन्तुलन की कुछ परिभाषाए निम्न है।

प्रो० वाटसन के अनुसार "फर्म वह इकाई है जो लाभ प्राप्त करने की दृष्टि से बिक्री के लिए उत्पादन करती है। इसका उद्देश्य लाभ को अधिकतम करना होता है।"

2. प्रो० हेन्सन के अनुसार "एक फर्म उस समय सन्तुलन मे होगी जब उत्पादन मे कमी करना या वृद्धि करना उसके लिए लाभकारी नही होगा।"

संक्षेप मे हम कह सकते है कि फर्म के साम्य की अवस्था की निम्नलिखित विशेषताए है

(i) साम्य का अर्थ परिवर्तन का अनुपस्थित होना है अर्थात इस हालत में फर्म अपनी कीमत या उत्पादन की मात्रा में किसी प्रकार का परिवर्तन नही करना चाहती है।

(ii) फर्म परिवर्तनहीनता की स्थिति में उस समय पहुँचती है जबकि उसे अधिकतम लाभ प्राप्त होता है।

फर्म का साम्य एवं साम्य शर्ते - फर्म का साम्य एवं साम्य की शर्तें की दो रीतिया है

(i) कुल आगम एवं कुल लागत वक्र रीति

(ii) सीमान्त आगम एवं सीमान्त लागत वक्र रीति

(i) फर्म का साम्य! कुल आगम एवं कुल लागत वक्र रीति :- इस रीति मे उत्पादन के विभिन्न स्तरों पर कुल आगम व कुल लागत का अन्तर मालूम करते है। कुल आगम की कुल लागत पर अधिकता लाभ कहलाती है। यदि कुल आगम कुल लागत से कम है तो हानि होती है। - Total Profit = Total Revenue — Total cost.

अर्थशास्त्र में लाभ का तकनीकी नाम "असमान्य लाभ" है। हम जानते है कि सामान्य लाभ लागत का भाग है। इसलिए सामान्य लाभ से अधिक लाभ को ही लाभ माना जाता है यदि केवल सामान्य लाभ मिलता है तो उसे शून्य लाभ कहा जाता है। यदि कुल आगम कुल लागत से अधिक हो तो फर्म लाभ प्राप्त करती है। यदि कुल आगम कुल लागत

Oxford
Scanned with CamScanner

से कम है तो यह हानि की स्थिति है। इसे एक चित्र के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

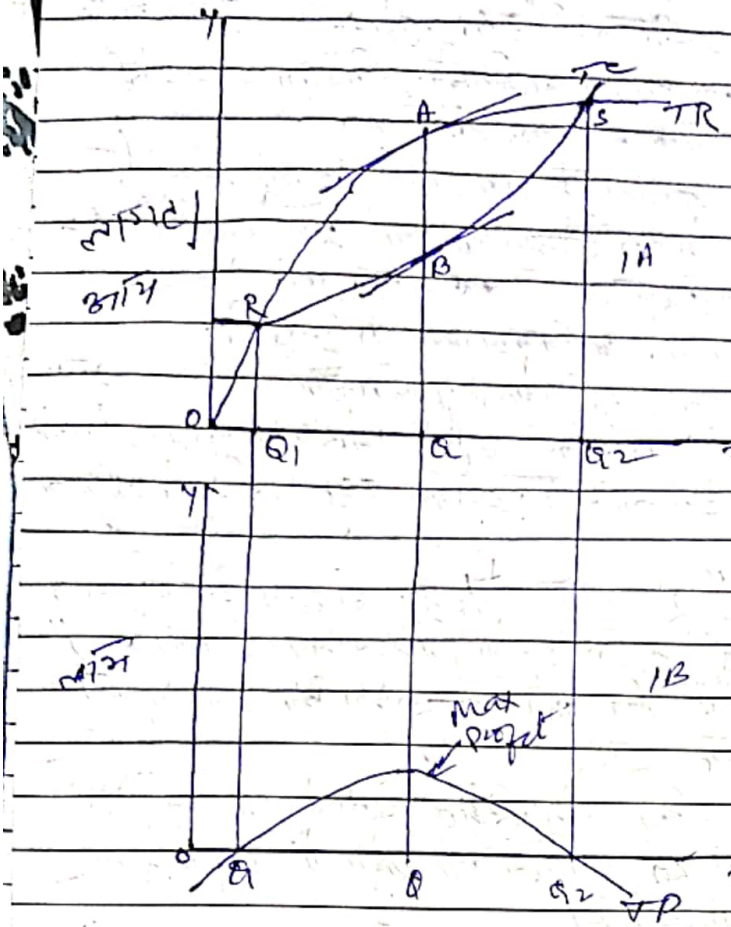

चित्र-1

उत्पादन के OQ1 स्तर पर कुल लागत वक्र कुल आगम वक्र को R बिन्दु पर काटता है। इसका अर्थ है कि R बिन्दु पर कुल आगम = कुल लागत। यही स्थिति उत्पादन स्तर OQ2 पर S बिन्दु पर है। R व S बिन्दु को समविच्छेद बिन्दु कहते हैं।

(ii) OQ1 उत्पादन स्तर से कम और OQ2 उत्पादन स्तर से ऊपर कुल आगम कुल लागत से कम है अतः हानि हो रही है।

(iii) उत्पादन OQ1 और OQ2 के बीच कुल आगम कुल लागत से अधिक रहती है और दोनों के बीच अधिकतम अन्तर OQ उत्पादन मात्रा पर है जहाँ TR और TC के बीच AB के बराबर अन्तर है। उत्पादन के किसी अन्य स्तर की तुलना में यह अन्तर अधिकतम है। अतः AB अधिकतम लाभ को प्रकट कर रहा है। चित्र 1B में कुल लाभ वक्र को प्रकट किया गया है। इस वक्र द्वारा ज्ञात होता है कि उत्पादन की OQ मात्रा पर TP वक्र अपने उच्चतम बिन्दु P पर होगी। अर्थात OQ मात्रा पर फर्म को अधिकतम लाभ प्राप्त हो रहा है।

अल्पकाल में फर्म को हानि भी हो सकती है। हानि की अनिवार्य स्थिति में फर्म सन्तुलन की स्थिति में तब होगी जब उसे न्यूनतम हानि प्राप्त हो रही हो। न्यूनतम हानि जानने के लिए भी हमें TR और TC वक्रों के बीच का अन्तर ज्ञात करना पड़ता है। ऐसी हालत में एक फर्म तब सन्तुलन में होती है जब TR और TC वक्रों का खड़ा अन्तर न्यूनतम होता है। इस स्थिति को हम एक दूसरे चित्र के द्वारा समझ सकते हैं। इस चित्र नं. 2 में TR कुल आय वक्र और TC कुल लागत वक्र है। अल्पकाल में एक फर्म हानि उठाती हुई भी उत्पादन करती रहती है। ऐसी हालत में कुल लागत वक्र कुल आय वक्र से ऊपर

होती है हानि की अनिवार्य स्थिति में फर्म का संतुलन किन्तु OQ उत्पादन मात्रा पर है। फर्म का OQ उत्पादन करने पर ही न्यूनतम हानि हो रही है। इसी उत्पादन पर TR और TC का अन्तर न्यूनतम है जो कि AB के बराबर है। इसका कारण यह है कि A और B बिन्दुओं पर TR एवं TC वक्रों का ढलान बराबर है। यह न्यूनतम हानि AB को व्यक्त करता है OQ1 और OQ2 उत्पादन स्तरों पर TR और TC का अन्तर अधिक है इसलिए यहां फर्म को अधिक हानि होती है। अतः हानि की अनिवार्य स्थिति में OQ उत्पादन को स्तर ही सन्तुलन का स्तर है और किसी उत्पादन स्तर पर सन्तुलन नहीं हो सकता है।

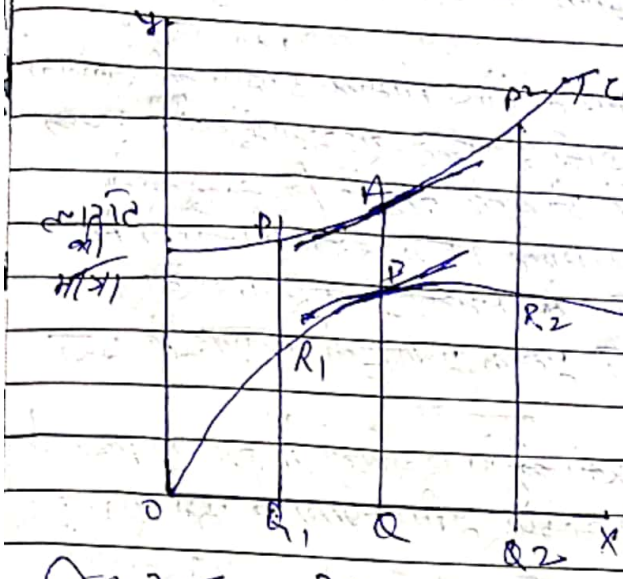

चित्र-2

(B) सीमान्त लागत एवं सीमान्त आगम स्थिति — इस विधि में विभिन्न उत्पादन स्तरों पर सीमान्त आगम तथा सीमान्त लागत का अन्तर ज्ञात किया जाता है। इस विधि के अनुसार फर्म सन्तुलन की स्थिति में उस समय होगा जब दो शर्तें पूरी होंगी

(i) अनिवार्य शर्त — MC = MR

(ii) पूरक शर्त — MC MR को नीचे से काटे।

(i) एक फर्म के अधिकतम लाभ की अनिवार्य शर्त यह है कि लाभ वहां अधिकतम होता है जहां सीमान्त लागत सीमान्त आय के बराबर होती है (i.e. MC = MR) यदि यह शर्त पूरी नहीं होती है तो फर्म का लाभ अधिकतम नहीं होता है।

अब प्रश्न यह है कि जब MR = MC होता है तो फर्म को अधिकतम लाभ प्राप्त क्यों होता है?

एक अतिरिक्त इकाई के उत्पादन व विक्रय का परिणाम — एक ओर तो लागत में वृद्धि होती है और दूसरी ओर आगम में वृद्धि होती है। विक्रेता अतिरिक्त लागत की अतिरिक्त आगम से तुलना करेगा और जब तक सीमान्त लागत सीमान्त आय से कम है वह उत्पादन बढ़ाता जायेगा। इससे उसके लाभ में वृद्धि होगी। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि

1) एक फर्म उस समय तक उत्पादन बढ़ाती जायगी जब तक सीमान्त आगम सीमान्त लागत से अधिक होती है।

2) एक फर्म उस समय उत्पादन में कमी करना पसन्द करेगी जब सीमान्त आगम सीमान्त लागत से कम होती है।

Scanned with CamScanner

(iii) एक फर्म उस समय उत्पादन में किसी प्रकार का परिवर्तन पसन्द नहीं करेगी जब सीमान्त लागत सीमान्त आगम के बराबर हो जायेगी। यह फर्म की सन्तुलन की स्थिति होगी। यह सन्तुलन की आवश्यक शर्त तो है परन्तु पर्याप्त शर्त नहीं है।

(2) पूरक शर्त — यद्यपि, सीमान्त लागत और सीमान्त आगम की समानता फर्म के सन्तुलन की अनिवार्य शर्त है परन्तु यह पर्याप्त नहीं है। एक और शर्त का पूरा होना जरूरी है और वह यह है कि सन्तुलन के बिन्दु पर सीमान्त लागत रेखा सीमान्त आगम रेखा को नीचे से काटे। इस को चित्र की सहायता से समझाया जा सकता है।

सन्तुलन की दोनों शर्तों का प्रत्येक प्रकार के बाजार में पूरा होना आवश्यक है।

फर्म के सन्तुलन की शर्तों को हम दो स्थितियों में अध्ययन करते हैं (1) पूर्ण प्रतियोगिता (2) अपूर्ण प्रतियोगिता में फर्म का सन्तुलन।

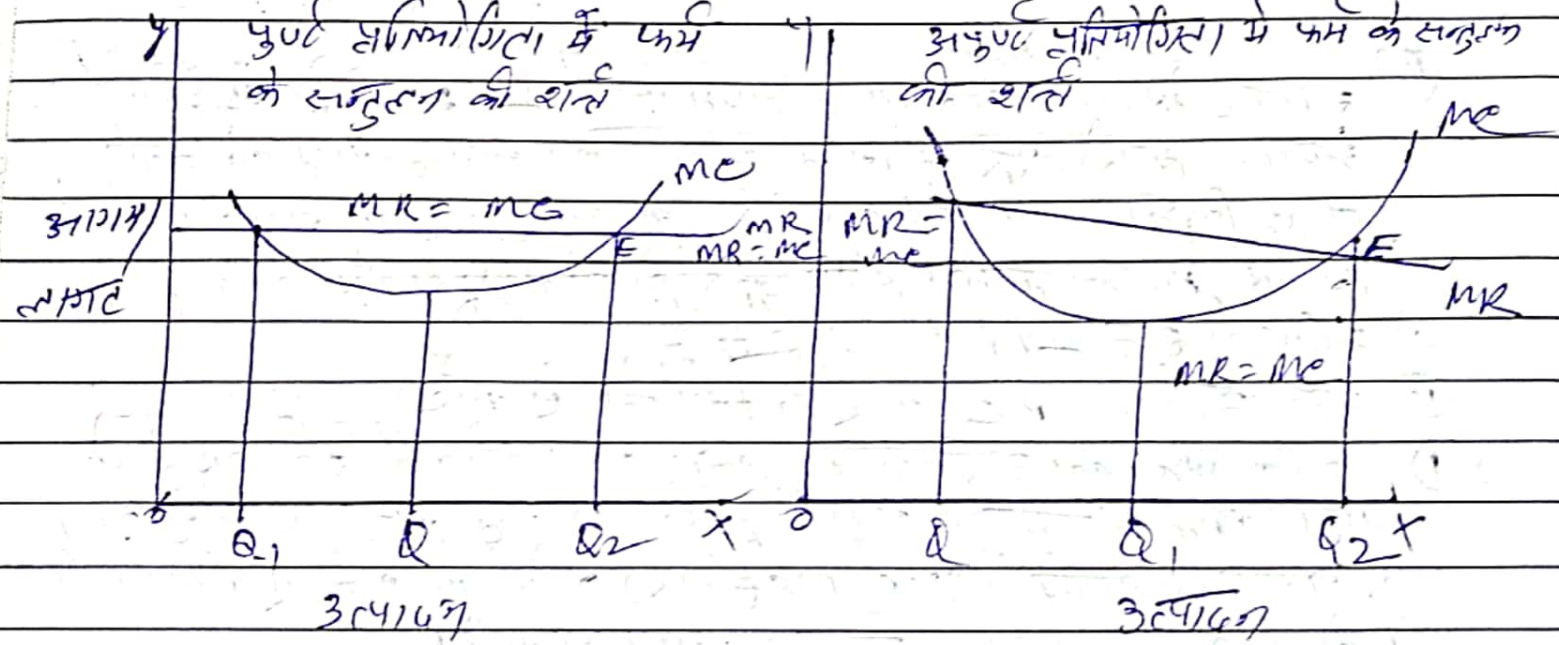

उपर्युक्त दोनों ही दशाओं में बिन्दु E फर्म का अन्तिम साम्य बिन्दु है जहां सन्तुलन की दोनों शर्तें पूरी हो रही हैं।

Scanned with CamScanner